पाठ 17

वर्षा-बहार

– श्री मुकुटधर पांडेय

73KUX7

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध और प्रकृति के चितेरे कवि श्री मुकुटधर पाण्डेय जी की प्रस्तुत कविता वर्षा बहार, वर्षा ऋतु के मनोरम दृश्यों और भावों को सहज रूपों में अभिव्यक्त करती है। वर्षा के कारण संपूर्ण प्राकृतिक परिवेश में जिस तरह के मोहक और आकर्षक परिवर्तन को कवि देखते और महसूस करते हैं उसे सरल भाव–लय में कविता में व्यक्त करते चलते हैं। कवि की दृष्टि मेघमय आसमान से लेकर हवा, पानी बादल, बिजली, जीव, जलचर, सौरभ, सुगीत, हंस, किसान सभी पर पडती चलती है। अंत में कवि का आतुर मन गा उठता है–"इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर, सारे जगत की शोभा है, निर्भर है इसके ऊपर"।

वर्षा बहार सबके, मन को लुभा रही है
नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।
बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं
पानी बरस रहा है, झरने भी बह रहे हैं।
चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब,
बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।
तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते,
फिरते लाखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते।
करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे,
मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।
खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है,
बागों में खूब सुख से, आमोद छा रहा है।
चलते कतार बाँधे, देखो ये हंस सुंदर,
गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।
इस भाँति है अनोखी, वर्षा बहार भू पर,
सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।

अभ्यास

पाठ से

1. वर्षा सबके मन को कैसे लुभा रही है ?
2. वर्षा ऋतु में हवा और बादल का दृश्य कैसा है ?
3. सौरभ के उड़ने से क्या हो रहा है ?
4. कवि किसानों के गीतों को मनहर क्यों कह रहा है ?
5. जीव–जलचर पर वर्षा का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
6. पपीहे द्वारा ग्रीष्म ताप खोने का अर्थ क्या है ?
7. 'सारे जगत की शोभा निर्भर इसके उपर' कहने से कवि का क्या आशय है ?

पाठ से आगे

1. वर्षा का मोहक रूप आप भी देखते होंगे वर्षा के कारण हमारे आस–पास की प्रकृति में क्या परिवर्तन आता है ?
2. वर्षा ऋतु जीवन और जगत को सरस बना देती है कैसे ? आपस में चर्चा कर लिखिए।

73UQYU

3. वर्षा ऋतु की अपनी चुनौतियाँ भी हैं जैसे रास्ते में कीचड़ का होना, वस्त्रों और बस्ते का भीगना, रास्ते में जल जमाव का होना आदि। आप अपने आस–पास वर्षा के कारण किस तरह की कठिनाइयों को देखते हैं, चर्चा कर उनका लेखन कीजिए।
4. वर्षा ऋतु का किसानों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? सहपाठियों से बातचीत कर उसे निबन्ध के रूप में लिखिए।
5. वर्षा का प्रभाव पेड़, पौधों वनस्पतियों पर किस प्रकार पड़ता है ? इस विषय पर चर्चा कर अपने विचारों को व्यक्त कीजिए।

भाषा से

1. इस चौखट में चार शब्दों के दो–दो पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। शब्द लिखकर उनके सामने पर्यायवाची शब्द लिखिए।

आकाश, पानी, बादल, मेघ, हवा, वायु, नभ, तोय, गगन, नीर, जलद, पवन।

2. इनके विलोम शब्द लिखिए–

   ठंडी, सुख, सुन्दर, प्रसन्न।

744M1H

3. 'मोद' में 'आ' उपसर्ग के योग से शब्द बना है – 'आमोद।' इसी प्रकार निम्नांकित उपसर्गों के योग से नए शब्द बनाइए–

   अ, अनु, प्र, परि

4. (क) "तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते।"
इस पंक्ति में **'जीव जलचर'** को ध्यान से पढ़िए। इसमें 'ज' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है। इस कविता में से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण लिखिए।
(ख) "दामिनी दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं", इस पंक्ति में दामिनी (बिजली) की चमक को खल (दुष्ट) की प्रीति के समान अस्थिर बताया गया है। जब दो वस्तुओं में समान गुण के कारण समता बताई जाती है तब उपमा अलंकार होता है। उपमा अलंकार के लिए चार बातें आवश्यक हैं– 1. जिसकी तुलना की जाय या जिसकी उपमा दी जाए। 2. जिससे तुलना की जाए या जिससे उपमा दी जाए। 3. जिन गुणों के कारण तुलना की जाय या उपमा दी जाय। 4. जिन शब्दों से उपमा प्रगट होती है। जिसकी तुलना की जाय उसे **उपमेय** कहते हैं। जिससे तुलना की जाए उसे **उपमान** कहते हैं। समान गुणों को **साधारण धर्म** कहते हैं और जैसे– जिमि, ज्यों, सम, सा, तुल्य आदि शब्द **वाचक शब्द** कहलाते हैं।
ऊपर के उदाहरण में 'दामिनी की दमक' उपमेय है, 'खल की प्रीति' उपमान है; 'स्थिर न होना' साधारण धर्म है और 'यथा' वाचक शब्द। इसलिए यह उपमा अलंकार है।
5. अपनी पढ़ी हुई कविता से उपमा अलंकार का कोई उदाहरण चुनकर लिखिए।
6. इस कविता में प्रयुक्त तत्सम और तद्भव शब्दों की सूची बनाइए।

योग्यता विस्तार

74DI35

1. वर्षा ऋतु पर बहुत सारी कविताएँ आपने पूर्व की कक्षाओं में पढ़ी होंगी उन्हें लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. वर्षा ऋतु में हमारे जीवन में क्या चुनौतियाँ आती हैं इसका आपस में मिलकर चित्रांकन कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
3. यहाँ कविता की प्रथम पंक्ति दी गई है। इसके आधार पर अन्य तीन पंक्तियों की रचना कीजिए।
बादल बरसें, नाचें मोर
______________ ______________ ______________
4. तुलसीदास जी ने रामचरितमानस के किष्किंधाकांड में वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। उसकी कुछ पंक्तियाँ पढ़िए।
घन घमंड नभ गरजत घोरा – प्रियाहीन डरपत मन मोरा।
दामिनि दमक रही घन माहीं – खल की प्रीति यथा थिर नाहीं।
बरसहिं जलद भूमि नियराए – यथा नवहिं बुध विद्या पाए।
अर्क जवास पात बिनु भयऊ – जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे – खल के बचन संत सह जैसे।